नेपाल का हर व्यक्ति भारत से निकट का संबंध रखता है

- देवेन्द्र राज कण्डेल, पूर्व गृह राज्य मंत्री, नेपाल

नेपाल शोध अध्ययन केन्द्र, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर एवं इतिहास संकलन समिति द्वारा आयोजित एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुदानित दो दिवसीय (14-15 फरवरी 2015) को राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर श्री देवेन्द्र राज कण्डेल पूर्व गृह राज्य मंत्री नेपाल का अभिभाषण।

मुझे गर्व और खुशी है कि हम लोग आज श्री गोरखनाथ की नगरी गोरखपुर में उपस्थित हैं। मेरा यह सौभाग्य रहा है कि मै यहाँ के दिग्विजयनाथ कॉलेज का छात्र रह चुका हूँ। इस कॉलेज के क्रीड़ा टीम का अध्यक्ष भी रह चुका हूँ। कलकत्ता में जो भी टूर्नामेंट होता था उसमें भी मैं भाग लेता था। खेल के क्षेत्र में भी मेरी कर्मभूमि यह गोरखनाथ की नगरी रही है। गोरखा एक छोटा-सा देश था, वहाँ के शासक पृथ्वी नारायण शाह थे। एक बार वे गोरखनाथ जी के पास गये तो गोरखनाथ जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। पृथ्वी नारायण शाह के पैर पर चूड़ा गिरा था। श्री गोरखनाथ जी ने कहा कि जहाँ-जहाँ यह गिरेगा वहाँ तक तुम्हें सफलता मिलेगी। श्री गोरखनाथ महराजा जी की ही कृपा से नेपाल का अस्तित्व बना है। अत: गोरखनाथ जी और इस संस्था से हमारा संबंध युगों का है भारत और नेपाल को राम और सीता ने धन्य कर दिया है। नेपाल के पशुपति नाथ मन्दिर में भारत के लोग जितनी संख्या में जाते हैं, उसके बराबर की संख्या में भारत के दक्षिणी भाग के रामेश्वरम में हमारे नेपाल के लोग पूजा अर्चना के लिए जाते है। अत: आदि काल से ही नेपाल का भारत के साथ सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है।

नेपाल की खुली सीमा के कारण ही भारत और नेपाल की सीमा पर रहने वाले लोगों का शादी ब्याह, खेत-खलिहान पर्व-व्यौहार में ऐसी समीपता हम देखते हैं कि दोनों देश बड़े और छोटे भाई के समान हैं। हमारे रहन-सहन, आचार विचार एवं धार्मिक परम्पराओं में इतनी निकटता है कि हम हर प्रकार से एक दूसरे के लिए हो गये हैं। भारत और नेपाल का सम्बन्ध अटूट है। भारतीय सेना में गोरखा रेजीमेंट है जिसकी निष्ठा पर किसी को भी संदेह नहीं हो सकता। नेपाल विश्व का एकमात्र हिन्दू राष्ट्र है और आगे तक यह बना रहेगा। आधुनिक नेपाल के निर्माता पृथ्वी नारायण शाह ने नेपाल की स्थापना की, जिन्हें आज भी नेपाली विदेशी नीति का कर्णधार माना जाता है। उन्होंने अपने समय के विशालतम प्रजातान्त्रिक प्रणाली की स्थापना की एवं भारत सरकार तथा चीन के बीच में नेपाल के स्थित होने से दोनों देशों के बीच मित्रता बनाये रखने का तर्क प्रस्तुत किया। भारत, प्राचीन काल से ही हिन्दू राष्ट्र रहा है और नेपाल भी अपने अस्तित्व काल से हिन्दू राष्ट्र है। प्रत्येक क्षेत्र में हम एक दूसरे के साथ रहें है। हमारे देश के अधिकांश युवक सीमाओं से सटे भारतीय क्षेत्र के संस्थानों में शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं। अत: हम भारत के ऋणी हैं। विश्व संस्कृति को भगवान बुद्ध की देन अनुपम है। नेपाल का हर व्यक्ति भारत से निकटता का संबंध रखता है। जब हमारे देश में कुछ राजनीतिक संकट उपस्थित हो गया था तो हमने अपने निकटतम पड़ोसी हिन्दू राष्ट्र भारत के साथ मिलजुलकर आतंकबाद को समाप्त करने का प्रयास किया। शान्ति स्थापना के लिए हम लोग पूरे देश (नेपाल) के अन्दर के आतंकवादी एवं उग्रवादियों को जड़मूल से नाश करने का बीड़ा उठाया था, लेकिन नेपाल के अन्दर साम्यवादियों का प्रभाव निरन्तर बढ़ता जा रहा था जिस कारण वे जैसे एक मात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल को समाप्त कर चीनियों के प्रभाव से धर्म निरपेक्ष राज्य बनाना चाह रह थे। शान्ति स्थापना का हमारा प्रयास समाप्त हो गया और वामपंथियों के प्रभाव से हमारे पंचायत में हिन्दू राजा ज्ञानेन्द्र की बातों को वे सुनना नहीं चाहते थे और हमारा दुर्भाग्य यह रहा कि उग्रवादियों को समाप्त करने के लिए हमारे नेतागण सारी बातों को भूल गये और उनके व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण, हाउस में बिना राजा की बहस के 'धर्म निरपेक्ष' राज्य का दर्जा दे दिया गया।

हमारे देश में 45 प्रतिशत हिन्दू हैं। उनकी इच्छाओं को दबाया जा रहा है। पशुपतिनाथ मन्दिर परिसर में इस्लाम धर्मावलम्बी भी अपनी कामयाबी सिद्ध करने के प्रयास में हैं। 2 प्रतिशत उनकी आबादी अभी 4 प्रतिशत हो गयी। ईसाई भी चर्च आदि की स्थापना की होड़ में लगे हुए हैं। पाकिस्तान के माध्यम से हमारे देश से भारत में नकली नोटों का व्यवसाय हो रहा है जिसमें भारत के नक्सली और माओवादी संगठन की भी भूमिका अहम है जिससे नेपाल की शान्ति और सुरक्षा भी खतरे में है।

हम भी गोरखनाथ मन्दिर से जुड़े हुए हैं। माओवादी लोग पार्लियामेंट्री प्रणाली को नहीं मानते हैं। हमारा प्रयास होगा कि मन्दिर से जुड़ी हुयी सभी संस्थाएँ तथा योगी आदित्यनाथ जी के जो उच्च आदर्श हैं, उसे लेते हुए हमारे नेपाल को हिन्दू राष्ट्र बनाने में भारत का सहयोग मिले जिससे नेपाल पुन: स्वतंत्र अखण्ड हिन्दू राष्ट्र बन सके। ब्रह्मलीन महंत अवैद्यनाथ जी के आशीर्वाद से गोपालपुर में एक गोरखनाथ मन्दिर की स्थापना हुयी है। इससे नेपाल और भारत में जो हिन्दुत्व की अवधारणा है उसकी पुष्टि होती है। इस मन्दिर ने हमारा सम्मान किया है तथा इन संस्थाओं से हम भारत के काफी निकट होते जा रहे हैं। भारत वर्ष हमारा शुभचिन्तक, बड़े भाई के रूप में है। मिलजुलकर हम दोनों देशों का राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में विकास करें, इसी मंगल कामना से हम अपनी वाणी को विराम देते हैं।

अन्त में मै पुन: इस संगोष्ठी के आयोजकों को धन्यवाद देना चाहूँगा कि उन्होंने मुझे इस पवित्र गोरखनाथ की नगरी में बुलाया है।

प्रस्तुति- महेश कुमार शरण
अवकाशप्राप्त प्रो., मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार